राजस्थान के जयपुर शहर की नगरीय पारिस्थितिकी का एक विशेष अध्ययन

*डॉ. पूर्णिमा मिश्रा
**नेहिल नायक

प्रस्तावना

नगरीय जीवन वह जीवन है जिसमें एक बड़ी संख्या में लोग साथ–साथ निवास करते हैं। वर्तमान समय में तो एक नगरीय क्रांति सी दिखाई पड़ती है क्योंकि समस्त संसार में लोग नगरों और शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। 1800 ई. में विश्व की जनसंख्या का केवल 5 प्रतिशत (50 मिलियन लोग) ही शहरी आबादी थी। वर्ष 1985 में यह बढ़कर 2 बिलियन हो गई। वर्तमान में विश्व की कुल जनसंख्या का 45 प्रतिशत शहरी आबादी है और 2030 तक 60 प्रतिशत से अधिक लोग शहरों मे रह रहे होंगे। यहाँ की कुल जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार 3046163 है जिसमें पुरूषों की संख्या 1603125 एवं महिलाओं की संख्या 1443038 है। नगरीय पारिस्थितिकी में जनसंख्या के साथ साथ उनके निवास की विभिन्न दशाओं और उनके क्रियाकलापों का पारस्परिक समन्वय का विश्लेषित अध्ययन किया जाता है साथ ही उन अन्तर–क्रियाओं से उत्पन्न दशाओं के सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं में सामन्जस्य स्थापित किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र

जयपुर शहर राजस्थान के उत्तरी पूर्वी भाग में अरावली पहाड़ियों की गोद में स्थित है। यह शहर $26^0 46'$ से $27^0 01'$ उत्तरी अक्षांश और $75^0 37'$ से $76^0 57'$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। इसकी औसत उचाई समुद्र तल से 425 मीटर है। यह नगर रेल, सड़क, मेट्रो व वायुमार्गों से जुडा हुआ है। यह उत्तर पूर्व में दिल्ली से 308 किमी., पूर्व में आगरा से 242 किमी., पश्चिम में अजमेर से 136 किमी. तथा दक्षिण में कोटा 250 किमी. पर स्थित है। सड़क मार्ग में राष्ट्रीय राजमार्ग न. 48 दिल्ली–मुम्बई, राष्ट्रीय राजमार्ग न. 21 आगरा–बीकानेर शहर से होकर गुजरते हैं। इनके अतिरिक्त राष्ट्रीय राजमार्ग न. 52 जयपुर–कोटा, राष्ट्रीय राजमार्ग न. 248 जयपुर–चन्दवाजी को जोडते हैं।

जयपुर राजस्थान राज्य की राजधानी है। जयपुर नगर की स्थापना सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। यहाँ कोई बड़ी नदी प्रवाहित नहीं होती है। कई छोटे–बड़े नदी नाले प्रवाहित होते हैं। यहाँ की जलवायु अर्द्धशुष्क प्रकार की है तथा यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 560 मिलीमीटर होती है। यहाँ अनुकूल जलवायु, समतल धरातल, उपजाऊ मृदा, रोजगार के साधन, शिक्षा के केन्द्र एवं अन्य सुविधाओं के कारण तीव्र नगरीकरण की प्रवृति पायी जाती है।

मानचित्र : जयपुर शहर की अवस्थिति

उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में नगरीय पारिस्थितिकी की विशेषताओं की जानकारी एकत्रित करना।
2. नगरीय पारिस्थितिकी से होने वाले दुष्प्रभावों का पता लगाना।

परिकल्पना

1. विगत दशकों में परिवर्तनशील जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप अध्ययन क्षेत्र में नगरीय पारिस्थितिकी प्रभावित हुई है।

शोध विधि

उक्त अध्ययन में उद्‌देश्यों एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए विषय पर उपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की सूचनाएँ सरकारी कार्यालयों से एकत्रित करके विश्लेषित की गयी हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सामग्री तथा आंकड़ों का एकत्रीकरण निम्नलिखित स्रोतों से किया गया है –

1. **प्राथमिक स्रोत :** इस सम्बन्ध में अनुसूची, प्रश्नावली, कार्यकरण तथा परिचर्चा के बारे में व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से उपयोग किया गया है।
2. **द्वितीय स्रोत :** इस सम्बन्ध में प्रकाशित व अप्रकाशित सामग्री, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों, उद्योगों की सूचनाओं का उपयोग किया गया है।

जयपुर शहर में जनसंख्या वृद्धि

किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि उस क्षेत्र की आर्थिक प्रगति, सामाजिक मान्यताओं, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि का प्रतिफल होती है। एक निश्चित समयावधि में किसी स्थान के निवासियों की संख्या में हुये परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि द्वारा व्यक्त किया जाता है। जनसंख्या वृद्धि को कुल जनसंख्या तथा प्रतिशत दोनों के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। प्रतिशत मूल्य ज्ञात करने के लिये निरपेक्ष वृद्धि को विगत वर्ष की जनगणना से भाग देकर 100 से गुणा कर दिया जाता है तथा वास्तविक वृद्धि दर ज्ञात करने के लिये 10 का भाग देकर ज्ञात की जाती है।

तालिकाः जयपुर शहर में दशकीय जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	जनसंख्या	जनसंख्या वृद्धि (प्रतिशत में)
1931	150000	–
1941	175810	17.21
1951	291130	65.59
1961	403444	38.58
1971	615258	52.5
1981	977165	58.82
1991	1458438	49.26
2001	2322575	62.77
2011	3046163	29.45

स्त्रोतः जनगणना विभाग, राजस्थान–1931 से 2011

जयपुर शहर में जनसंख्या वृद्धि के अन्तर्गत वर्ष 1931 के दशक से वर्ष 2011 तक के दशक का अध्ययन किया गया है। वर्ष 1931 मे जयपुर की जनसंख्या 150000 थी जो वर्ष 1941 मे बढकर 175810 हो गई अर्थात 1931 से 1941 के दशक में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में 17.21 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 1941 से वर्ष 1951 के दशक में क्षेत्र की जनसंख्या मे 65.59 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो कि अभी तक की सर्वाधिक वृद्धि दर थी।

वर्ष 1951 से 1961 के दशक में क्षेत्र की जनसंख्या में वृद्धि कम हुई है यह वृद्धि 38.58 प्रतिशत रही है जिसमें परिवार नियोजन कार्यक्रमों की पालना का प्रभाव रहा है। वर्ष 1961 से वर्ष 1971 तक जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत बढ़ा है, जो की 52.50 प्रतिशत रहा है। वर्ष 1971 से 1981 के मध्य यह 58.82 प्रतिशत रहा है जबकि वर्ष 1981 से 1991 के दशक में यह वृद्धि कम हुई और 49.26 प्रतिशत हो गई।

वर्ष 2001 में यह बढ़कर 62.77 प्रतिशत हो गई जबकि वर्ष 2011 में वृद्धि की दर में अचानक गिरावट में तेजी आई है और यह घटकर मात्र 29.45 प्रतिशत ही रह गई है, जिसका मुख्य कारण जागरूकता एवं शिक्षा का प्रचार रहा है। अतः अध्ययन से स्पष्ट है कि जयपुर शहर में जनसंख्या वृद्धि परिवर्तनशील और काफी उतार–चढ़ाव वाली रही है। संरचनात्मक सुविधाओं का विकास और उसकी गहनता से वृद्धि के साथ द्वितीयक और तृतीयक सेवाओं में वृद्धि का प्रभाव जनसंख्या वृद्धि पर हुआ है।

नगरीय पारिस्थितिकी की विशेषताएं

1. जयपुर नगरीय क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व अधिक पाया जाता है जो कि जनसंख्या के सघन निवास को प्रदर्शित करता है।
2. अध्ययन क्षेत्र में बाजारों में भीड़–भाड़, घरों की कमी तथा झोपड़ पट्टी में वृद्धि हुई है।
3. शहरी क्षेत्र उत्तरजीविता के लिए उर्जा, खाद्य पदार्थ, वस्तुओं तथा अन्य सामान की बढ़ती हुई मात्रा का बाहर से आयात करता है।
4. अत्यधिक मात्रा में ठोस और द्रव अपशिष्ट पदार्थ उत्पन्न करते हैं तथा वायु प्रदूषक पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्याएं उत्पन्न करते हैं।
5. जयपुर शहर में रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हैं और साथ ही अत्यधिक प्रतिस्पर्धा भी पायी जाती है।
6. अध्ययन क्षेत्र में बेहतर शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध हैं।
7. बेहतर चिकित्सीय सुविधाएं और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं।
8. शहरी क्षेत्र में मनोरंजन के विविध स्रोत मौजूद हैं।

नगरीय पारिस्थितिकी के लाभ

1. जयपुर नगरीय क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से सुविकसित क्षेत्र है।
2. अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक वृद्धि के केन्द्र पनपने से आर्थिक विकास हुआ है।
3. अध्ययन क्षेत्र व्यापार के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है।
4. बहुसांस्कृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण सुदृढ़ हुआ है।
5. चिकित्सीय सुविधाओं के बेहतर होने के कारण कम शिशु मृत्युदर पायी जाती है।
6. राजनीतिक गतिविधियों में अधिकता पायी जाती है।

नगरीय पारिस्थितिकी के दुष्प्रभाव

1. नगरीय पारितंत्र ग्रामीण पारितंत्रों की तुलना में अधिक संसाधनों को उपभोग करते हैं तथा अधिक कचरा उत्पन्न करते हैं।
2. जयपुर नगरीय क्षेत्र अत्यधिक प्रदूषित होता जा रहा है, क्योंकि मोटर गाड़ियों और उद्योगों की बढ़ती हुई संख्या के कारण बहुत अधिक मात्रा में प्रदूषक उत्पन्न होते हैं।
3. उद्योगों और परिवहन के कारण उत्पन्न होने वाले ध्वनि प्रदूषण से ग्रस्त रहते हैं।
4. जयपुर नगरीय पारितंत्र में जल का अभाव उत्पन्न होने लगा है।
5. अत्यधिक आपराधिक दर, अशांति और बेरोजगारी पायी जाती है।
6. शहर में बढ़ते हुए जनसंख्या घनत्व के कारण कुछ लोग झुग्गी झोपड़ियों में रहने को बाध्य हो गये हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में जयपुर शहर के नगरीय क्षेत्र की पारिस्थितिकी का अध्ययन किया गया है। जयपुर शहर में नगरीय जनसंख्या नगर निगम क्षेत्र में ही निवास करती है। यहां की कुल शहरी जनसंख्या 3046163 (जनगणना 2011) है। यहाँ की जनसंख्या सघन रूप में निवास करती है। यहाँ शिक्षा, रोजगार, मनोरंजन, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य आदि की सुविधाएं उत्तम हैं। नगरीय क्षेत्र होने के कारण विभिन्न औद्योगिक व राजनीतिक गतिविधियां एवं कम शिशु मृत्यु दर पायी जाती है। अधिक जनसंख्या के कारण क्षेत्र में संसाधनों का अधिक उपयोग, परिवहन के साधनों की अधिकता, औद्योगिक कार्यों की अधिकता रही है। इन सभी गतिविधियों के कारण अध्ययन क्षेत्र वायु, जल, मृदा एवं ध्वनि प्रदूशण जैसी समस्याओं में अधिकता आई है। अतः विगत दशकों में परिवर्तनशील जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप अध्ययन क्षेत्र में नगरीय पारिस्थितिकी प्रभावित हुई है।

***एसोसिएट प्रोफेसर**
****शोधार्थी**
भूगोल शास्त्र विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर (राज.)

सन्दर्भ

1. सक्सेना, एच.एम. (2022), राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. गौतम, अल्का (2020), कृषि भूगोल, शारदा प्रकाशन।
3. जोशी, रतन (2020), नगरीय भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. बंसल, सुरेश चन्द्र (2018), नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन।
5. जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2015, जयपुर जिला।